**501**। विश्व में स्थाई शान्ति व विकास के लिये यदि अपराधिक प्रवृत्ति के लोगों को नैतिकता व सच्चाई का धार्मिक आयोजनों द्वारा व आध्यात्मिक मूल्यों का सत्संग द्वारा ज्ञान करायें तो निश्चय ही उनके अन्दर मनोवैज्ञानिक बदलाव आयेगा और दुष्कर्म छोडकर सत्कर्म अवश्य अपनायेंगे तथा समाज में शांतिपूर्ण वातावरण निर्माण होगा । इसके लिये हिंसा का रास्ता अपनाना क्लेशपूर्ण व कष्टदायी होगा ।

**502**। रे मन जीवनरूपी नौका को काम कोध लोभ अहंकार व माया रूपी सांसारिक दलदल से दूर रखो तभी शांत चित्त होकर रागभक्ति द्वारा प्रभु का सुमिरन कर सकेंगे और जीवन रूपी नौका को खेकर मुक्ति दिला सकेंगे।

**503**। स्वार्थ पूर्ण प्रेम अल्पकालीन व दुखदायी होता है निस्वार्थ प्रेम स्थाई व सुखदायी होता है ।

**504**। अपने परिश्रम व लग्न से विजय पाकर आप एक अच्छे निष्कर्ष पर पहुँचते हैं पराजय पाकर बुरे निष्कर्ष पर , परन्तु दोनों ही भाग्य पर निर्भर करते हैं ।

**505**। आजकल के लोग दुनियां की भौतिकता की चकाचौंध में पागल हैं विलासिता की वस्तुओं के पीछे एक दूसरे की होड में आगे आने के प्रयत्न में लगे हुये हैं ,और चलचित्रों व कलाकारों के पीछे दीवाने हैं उनके अपने जीवन का कोई लक्ष नहीं है परन्तु मृत्यु के बाद वो सिर्फ अकेले ही खडे होंगे कोई कलाकार व वस्तु उनके साथ नहीं होगी उस समय जीवन के सारे अच्छे बुरे कर्म ही उनके साथ होंगे ,और उन्हीं पर उनका अंतिम निर्णय होगा

**506**।"हिंसा",अशांति, दुख और दुष्कर्मो की जननी है और "अहिंसा" शांति सुख और सत्कर्मो की जननी है।

**507**।प्रभु से माँगना है तो सच्चाई , दया , परोपकार , भक्ति इत्यादि अच्छे गुणों को माँगो ताकि यह हृदय पवित्र होकर उनको पा सके  और काम कोध मोह अहंकार व वासना आदि दुर्गुणों से दूर रहकर ये जीवन कृतार्थ हो सके ।

**508**। सद्‌गुण मुक्तिदायक व दुर्गुण नरकगामी होते हैं । कलयुग की कितनी बडी महिमा है वह आजकल देखने को मिलती है जो जितना बडा लुच्चा व दुष्चरित्र है वो उतना ही बडा राजनीतिज्ञ है जो जितना बडा अहंकारी है पाखंडी है वो उतना ही बडा साधु है जो जितना नग्न होकर व निर्लज्ज होकर हाथ पैर फेंक सकता है वो उतना ही बडा कलाकार है , सब क्षेत्रों में यही क्रम है । उनको तथाकथित बडे बडे लोगों द्वारा ही बडे बडे उत्सवों में बडा बडा मान भी दिया जाता है । कलयुग का यही मानव धर्म व नैतिकता है । हे प्रभु , उन्हें सद्‌बुद्धि दो और उनका कल्याण करो।

**509**।"कर्त्तव्य पालन " स्वार्थ रहित निश्चय किया हुआ अनुष्ठान है जो जीवन में संयम व अनुशासन निर्माण करता है ।

**510**। जो व्यक्ति मौन व्रत रखकर हृदय के सब बुरे विचारों को नियंत्रित कर अच्छे विचारों को अपनाता है वह सब क्लेशों और दुर्गुणों से दूर रहकर परम शांति ही पाता है ।

**511**। अज्ञानी व्यक्ति झूठ और बुरे कर्मो से डरता है साहस न होने के कारण उन सब से दूर ही रहता है परन्तु जो व्यक्ति ज्ञानी होने का दिखावा करता है वह अपने दिखावे को छिपाने के लिये सैंकडों बार झूठ बोलता है तथा बुरे कर्मो को भी करने से पीछे नहीं हटता सब पापों का भागी होता है तथा सबको धोखा देता है।

**512**। पुष्प क्षणिक जीवन होने पर भी अपनी पूर्ण सुन्दरता खुश्बू व आभा से सबका मन प्रसन्न व प्रफुल्लित करता रहता है उसी प्रकार पुरूष को भी पुष्प की तरह जीवन के सब विकारों से दूर रहकर सब दुख दर्दो को भूलकर प्रसन्न चित्त प्रभु का सुमिरन कर स्नेह से अपने व सबके हृदय को प्रफुल्लित करते रहना चाहिये यही अच्छे व सच्चे जीवन का मूल है ।

**513**।उस देश की जनता का जीवन निरर्थक है जो देश के गौरव व आत्म सम्मान की चिंता व रक्षा नहीं करती , दोनों ही देश व देश की जनता की आत्मा हैं। विश्व में एक देश का स्थान, मान इन्हीं दोनों पर निर्भर करता है।

**514**। कायरता मनुष्य के लिये अभिशाप है जो उसके जीवन में अच्छे भविष्य व उन्नति के लिये ग्रहण का कार्य करती है ।

**515**। मानव के "जन्मजात" संबंध व "संपादित" संबंध तो थोडे समय के हैं जब तक यह शरीर है फिर भी मनुष्य मोह माया के कारण जीवन भर इन्हीं में उलझा रहता है और मुक्ति नहीं पाता है । वास्तविक संबंध आत्मा का परमात्मा से है वह था और जन्म जन्मान्तर तक रहेगा उसे मानव भूल जाता है यदि वह मोह माया छोडकर आत्मा को परमात्मा से जोड ले तो भवसागर से तर जायेगा , मुक्ति मिल जायेगी ।

**516**। इस मायारूपी संसार की संपत्ति व कमाई तो दुखदायी पापों को बढावा देने वाली व अस्थाई व नरकगामी है परन्तु भक्ति धर्माचार व सत्कर्मो की संपत्ति ऐसी धरोहर है जो सुखदायी पापों को हरने वाली तथा स्थाई है उससे यह लोक व परलोक दोनों ही सुधर जाते हैं प्रभु मिल जाते हैं ।

**517**।"परमात्मा","आत्मा" दृष्टि से परे है पर जो व्यक्ति सच बोलता है भजन करता है हृदय से ईश्वर की आराधना करता है दुर्गुणों से दूर रहताा है उसे परमात्मा की अनुभूति होने लगती है , मृत्यु से भी डर नहीं लगता और अंत में मुक्त हो जाता है ।हृदय की पवित्रता ही श्रेष्ठ है ।

**518**।आमदनी से ज्यादा खर्च करना विपत्ति का कारण होता है, कम खर्च सुख चैन प्रदान करता है।

**519**। ऋण मुक्ति से सुख शांति मिलती है। इसके बिना कोई व्यक्ति व राष्ट्र सुखी नहीं रह सकता ।

**520**। अपने जीवन निर्वाह के लिये सत्कर्मो को अपनाने वाला प्रभु का परम भक्त है।

**521**। सदाचारी कर्त्तव्य निष्ठ व्यक्ति प्रपंच का सहारा नहीं लेता , उसका जीवन स्वच्छ निर्मल गंगाजल की भांति पवित्र होता है।

**522**। अच्छो कर्मो को अपनाने से सबका कल्याण होता है स्वयं व समाज के लिये लाभकारी होता है ।

**523**। निस्वार्थ व आसक्ति रहित कर्म करो , श्रद्धा से सब प्राणियों की सेवा व दुखों का निवारण करो। दुनियाँ एक सराय है हमें सब छोडकर जाना है प्रभु का हृदय से सुमिरन ही जीवन के उद्धार का मूल मंत्र है ।

**524**। सामाजिक अपराधों का विरोध हमेशा जनहित में होता है और सामाजिक सुधारों का विरोध व्यक्तिगत स्वार्थों के लिये होता है ।

**525**। निस्वार्थ सच्चाई व परोपकार को दृष्टि में रखकर किया हुआ कर्म ही "कर्मयोग" कहलाता है इसी के तपस्यामय होने से संसार व जीवन से मुक्ति मिलती है।

**526**। दूसरों के दुख व दर्दों को देखकर आनंदित होना दानवता का , द्रवित होना मानवता का परिचायक है।

**527**। आज के अणु युग में पाश्चात्य संस्कृति के कारण अच्छे आचरण पर बुरा आचरण हावी हो गया है इससे विश्व में अराजकता अनैतिकता भ्रष्टाचार बलात्कार व आतंकवाद की प्रधानता है अध्यात्मवाद का कोई मोल नहीं रह गया है यह भौतिकवाद के साये का परिणाम है।

**528**।अपने परम प्रिय परमात्मा से भौतिक धन प्राप्त करने के स्थान पर आध्यात्मिक धन की प्राप्ति के लिये प्रार्थना करो , **84** लाख योनियों का द्वार नहीं आपको मुक्ति का द्वार मिलेगा ।

**529**। प्रार्थना से अभिमान शून्यता आती है स्तुति से प्रभु प्रेम तथा उपासना से परब्रह्म परमात्मा का साक्षात्कार होता है यही उद्धार का मार्ग है ।

**530**। विश्व में विनाश व विकारों के साधन बढते जा रहे हैं , प्रभु चिन्तक , निस्वार्थ सेवी , सुविचारी प्रभु का अनन्य भक्त है।

**531**। निस्वार्थ सेवा सत्कर्म है स्वार्थ व भोग वासना से किया हुआ कर्म दुष्कर्म है।

**532**। स्वार्थ परायणता पाप है निस्वार्थ परायणता पुण्य है ।

**533**। एक धनी जिसका हृदय पवित्र नहीं है विकारों का घर है निर्धन का पवित्र हृदय प्रभु का स्थान है ।

**534**। सब इन्द्रियों की चंचलता व भोग लिप्सा के कारण ही मनुष्य पापी संसार में अवरूद्ध रहता है यदि वह सत्संग भजन ध्यान व प्रभु की आराधना द्वारा इन्द्रियों को वश में करे तो सब जन्मों से छुटकारा पाकरमुक्ति पा सकता है।

**535**। संकल्पवान पुरुष अपने जीवन के लक्ष को पाने के लिये हमेशा तन मन व धन से दृढ प्रतिज्ञ रहता है प्रभु के आशीर्वाद से उसका यह और आगे आने वाला जीवन भी सुधर जाता है । परम शांति पाता है ।

**536**। तन को निरोगी व स्वस्थ रखकर जीवन में प्रसन्नता आती है मन को भजन चिंतन में लीन करने से परम शांति मिलती है , जन्म मरण के बंधन से मुक्ति मिल सकती है ।

**537**। सबकी उन्नति में ही स्वंय की उन्नति निहित रहती है । स्वयं की उन्नति का प्रयास स्वार्थप्रद होता है सबकी उन्नति का प्रयास सार्वजनिक हित में सबके कल्याण के लिये होता है ।

**538**। " कपटता" दानवीय है सब दुर्गुणों को जन्म देती है तथा निष्पक्षता दैविक है सब विकारों को हरती है ।

**539**। जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है जो आज युवा है वह एक दिन वृद्ध अवश्य होगा । जो आज स्वस्थ बलवान है वह एक दिन रोगी शक्ति हीन भी होगा। जैसे हम कर्म करेंगे उसका फल भी अवश्य मिलेगा तथा संसार में सब वस्तुयें नाशवान हैं। सब कुछ जानते हुये भी संसार की मोहमाया छोडकर अपने कल्याण के लिये यदि हम प्रभु का दामन नहीं थामते हैं तो मुक्ति कैसे मिलेगी ?

**540**। इन्द्रियों को वश में करके सब वासनाओं का त्याग , ममता मोह व अहंकार का त्याग ही परम शांति को प्राप्त कराता है इनके रहते मनुष्य सदैव अशांत बना रहता है पापों को ही भोगता है।

**541**। यह धारणा , ईश्वर भाग्य का निर्माण करते हैं गलत है हम अपने भाग्य का निर्माण स्वयं ही करते हैं जैसे कर्म करेंगे वैसे ही फल हमें मिलेंगे । कर्म तो बीज हैं जैसे बीज बोयेंगे वैसे ही फल प्राप्त होंगे ।फिर ईश्वर को दोष देना हमारी अज्ञानता ही है। कर्म ही श्रेष्ठ होते हैं ।

**542**। जल से उत्पन्न लाखों लहरें किलोल करती हुई जल में ही विलीन हो जाती हैं उसी प्रकार लाखों मनुष्य व प्राणी भी ब्रह्म से उत्पन्न होकर ब्रह्म में ही लीन हो जाते हैं ।

**543**। सच्चा संत वही है जो अहंकार व क्रोध रहित है जिसकी सब इच्छा व आकांक्षायें समाप्त हो गई हों मोह माया से परे हो जिसकी सब इन्द्रियां आत्मा के आधीन व वश में हों ।

**544**। जन्म लेते समय मनुष्य शरीर साथ लेकर आता है मोह माया से परे होता है हृदय एक दम पवित्र होता है परन्तु मृत्यु के समय उसे अच्छी तरह मालूम है कि मैं कुछ भी साथ लेकर नहीं जाउंगा और यह शरीर भी यहीं रह जायेगा फिर भी मोह माया आशा उत्कंठा मेरा व अपना आदि आदि बंधनों में जकडा रहता है यह उसकी अज्ञानता व नासमझी ही है ।

**545**। चरित्र निर्माण दैविक व नैसर्गिक नहीं होता है । यह मनुष्य की संगत है जो उसे निर्माण करती है और पूर्ण विकसित रूप भी देती है ।

**546**। जैसे एक ही सूर्य पूरे विश्व को प्रकाशित कर सबको जीवन दान देता है हर प्रकार से लाभकारी होता है वैसे ही एक गुणवान व आज्ञाकारी पुत्र पूरे कुटुम्ब के दुखों को दूर कर आर्थिक दृष्टि से नया जीवन देता है। कुटम्व के प्रत्येक सदस्य को सुखी रखता है तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्रदान करता है।

**547**। संसार में कितने ही धर्म हों कितनी ही पूजा विधियां हों कितने ही रास्ते हों कितने ही साधन हों पर सबकी मंजिल एक ही है सबका ईश्वर एक ही है । वो ही परब्रह्म परमात्मा है पूरे ब्रह्मांड का निर्माता व स्वामी है संचालक व रक्षक है एक ही शक्ति है ।

**548**। जो व्यक्ति गेरूआ वस्त्र धारण कर अपने को संत कहता है और दादागिरी के जोर पर मंदिर में चढावे के पैसों को हडपता है अपनी सुरक्षा के लिये बन्दूकधारी रखता हो ऐसा पाखंडी व मद से युक्त व्यक्ति कभी भी भगवान को प्राप्त नहीं कर सकता उसे आजन्म नरकवास ही मिलेगा ।

**549**। क्षणिक सुख सुविधाओं के लिये तंत्र विद्या व सिद्धियों को प्राप्त करना अज्ञानता है वो तो जीवन के साथ समाप्त हो जाने वाली व दुखदायी है चिर सुख शांति के लिये तो प्रभु की रागभक्ति द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त करना ही एक मात्र उपाय है।

**550**। मायामय संसारी पुरुष को इस नाशवान शरीर से कितना मोह व प्रेम होता है वह मृत्यु का नाम सुनते ही डरता है कितना भयभीत हो जाता है परन्तु जिस साधु पुरुष ने मोहमाया व सब इच्छाओं का परित्याग कर अपने को प्रभु के अर्पण कर दिया है उसे अपने इस नाशवान शरीर से कोई मोह नहीं रहता , मृत्यु का भी भय नहीं रहता और वह शांत व निर्भीक जीवन व्यतीत करता है।

**551**। रे मन इस कलुषित हृदय में अच्छे विचारों को ग्रहण कर प्रभु के सुमिरन रूपी गंगाजल से अच्छी प्रकार से शुद्ध करो , तभी प्रभु की सौम्य मूर्ति हृदय में विराजमान होगी , पापी शरीर व जीवन का उद्धार होगा ।

**552**। श्री कृष्ण में "मीरा" की दृढ व अटूट प्रीति थी , घर के सभी लोग विरोध करते थे यहाँ तक कि उनकी जीवन लीला समाप्त करने के लिये कई उपाय किये गये पर वो भी सब प्रभु कृपा से उनके लिये वरदान सिद्ध हुये । अपने जीवन में हृदय को स्पर्श करने वाले कृष्ण के वियोग में बहुत भजन उन्होंने गाये । अंत में जीवन भर श्री कृष्ण की भक्ति व आराधना करती हुई उन्हीं में विलीन होकर विरह में अमर हो गई ।भारत उन्हें कभी भी भुला नहीं पायेगा ।

**553**। जन्म और मृत्यु के बीच की यात्रा अपना जीवन होता है यदि इस यात्रा को सत्कर्मों में , निस्वार्थ सेवा में , भगवत् प्रीति में लगाया जाये तो पुनर्जन्म नहीं होगा , अन्यथा चौरासी लाख योनियों में भटकना पडेगा ।

**554**। विश्व में धर्म तो बहुत हैं पर मुख्य चार हैं , सनातन बौद्ध ईसाई व इस्लाम । बौद्ध थर्म के संस्थापक बुद्ध थे, ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह थे व इस्लाम के संस्थापक पैगम्बर साहब थे परन्तु सनातन थर्म का संस्थापक कोई नहीं था न होगा यह विश्व की सृष्टि के आदि से ही है और अनादि काल तक रहेगा ।

**555**। संसार की जड वस्तुओं , भौतिक वस्तुओं का त्याग करने पर ही शांति संभव है प्रभु का हृदय से चिन्तन कर हम इस भवसागर से पार पा सकते हैं ।त्याग की महिमा महान है ।

**556**। कीर्त्तन करना , माला जपना, जल चढाना, आरती करना आदि प्रारंभिक कियायें भगवान में आस्था व प्रीति उत्पन्न करती हैं तत्पश्चात् प्रभु के प्रति निरंतर सच्चा प्रेम,राग भक्ति आत्म ज्ञान व साक्षात्कार कराता है।

**557**। पहले फिल्मों में आदर्श कहानियां हुआ करती थीं हृदय स्पर्शी गाने होते थे राष्ट्रीय भावनाओं के साथ शिक्षाप्रद व समाजसुधारक फिल्में होती थीं परन्तु आजकल केवल सैक्स प्रदूषण से नई पीढी को गुमराह किया जाता है पथभ्रष्ट और चरित्रहीन बनाया जाता है फिल्म निर्माता केवल पैसों के लिये राष्ट्र व युवापीढी के बारे में कुछ नहीं सोचते , इनका भविष्य क्या होगा ?

**558**। मनुष्य की महत्ता जाति से नहीं कर्मों से होती है । ब्राह्मण कुल में जन्म लेने वाला भी दुराचारी नास्तिक व शूद्र श्रेणी का हो सकता है जबकि शूद्र कुल में जन्मा व्यक्ति आस्तिक सदाचारी व ईश्वर भक्त हो सकता है।

**559**। हृदय से काम क्रोध लोभ मोह व अहंकार आदि दुर्गुणों को त्याग कर अच्छे व धार्मिक विचारों से अपने हृदय को सुसज्जित करना ही सच्चा धर्म है ऐसे धर्माचरण वाला ही असली धर्मात्मा है ।

**560**। आसक्ति दुष्कर्मो को व वैराग्य सत्कर्मो को आमंत्रित करते हैं ।

**561**।मन तो स्वेत पत्र है इस पर जैसा रंग चढायेंगे वैसा ही रंग चढेगा । मायावी संसार का भौतिक रंग हमें इस संसार में भटकायेगा और आध्यात्मिक रंग हमें संसार से तार देगा ।

**562**। व्यक्ति की सहजता व सरलता ही हृदय को पवित्र करती है दोनों ही प्रभु को प्रिय हैं इसलिये वह प्रभु का प्रिय व उनकी कृपा का अधिकारी होता है ।

**563**। मन का संयोग सत्संग से होता है तो वह व्यक्ति सब विकारों से दूर होकर परम शांति को पाता है।

**564**। विश्व में उच्चतर भौतिक विकास , चाँद सितारों तक पहुंचना, एटम व हाइड्रोजन बम का बनना आदि सब ईश्वर की ही देन हैं ।मनुष्य को शक्ति व मस्तिष्क तो उन्हीं से मिला है वह तो साधन मात्र है उनको श्रेय न देकर स्वयं को श्रेय देकर अपने को अज्ञानी सिद्ध करता है ।

**565**। गृहस्थ में जीवन यापन के लिये धन की आवश्यकता होती है जो केवल साधन है साध्य तो भगवत् प्राप्ति व परम शांति का मिलना है तभी उसका उद्धार होगा ।

**566**। अहंकार क्रोध मद व कटु वचन से मनुष्य अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है नाना प्रकार के अपराध करने को उद्यत रहता है उसे नरकवास के अलावा कुछ नहीं मिलता ।

**567**। दुष्कर्म अप्रत्यक्ष रूप से दानवीय व सत्कर्म मानवीय आराधना होती है।

**568**। यश मान व प्रतिष्ठा तो नाशवान् व क्षणिक होते हैं परन्तु निस्वार्थ सेवा सत्कर्म व रागभक्ति तो अमर हैं इस लोक व परलोक दोनों को सुधारने वाले होते हैं ।

**569**। अच्छे विचारों से युक्त हृदय निर्मल व अभिमान शून्य होता है।

**570**। अपराधों व दुष्कर्मो से व्यक्ति अज्ञानी व अपराधी बनता है सत्संग व सत्कर्मो से ज्ञानी व संत बनता है।

**571**। एक अबोध बालक का हृदय एक दम स्वच्छ निर्मल स्वेत पत्र जैसा होता है मनचाहा रंग चढा सकते हैं।

**572**। जीव हत्या व मानव हत्या में कोई अन्तर नहीं है दोनों को ही दुख सुख की अनुभूति समान रूप से होती है परन्तु मानव हत्या को कानून प्रावधान से अधिक महत्व दिया जाता है जीव हत्या को नहीं यह अज्ञानता है।

**573**। अनेक कामनओं की पूर्ति के लिये अनेक दुष्कर्म किये जाते हैं जीवन भर उनके पीछे भागने से कभी भी मनुष्य को शांति नहीं मिलती ।

**574**। जिसकी देहात्म बुद्धि समूल नष्ट हो जाती है प्रभु कृपा पात्र हो जाता है वह संत महापुरुष अपने आप में संतुष्ट रहकर आत्म ज्ञान प्राप्त कर परम गति को प्राप्त करता है।

**575**। प्रकृति व संपूर्ण ब्रह्मांड की रचना पूर्णत: दैविक व विज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित है । जड व चेतन में कोई भी पहलू बिना दैविक व वैज्ञानिक सिद्धांतों के नहीं होता है।

**576**। पूरे विश्व में दो वाद हैं पहला अध्यात्मवाद दूसरा भौतिकवाद । आध्यात्मिकता मनुष्य के संपूर्ण कल्याण का कारण होती है और भौतिकता संपूर्ण विनाश का ।

**577**। नारी के दो रूप होते हैं एक आदर्श नारी अपने सौम्य व कुशल व्यवहार से सुख शांति प्रदान कर घर को स्वर्ग बनाती है दूसरी अभद्र नारी उग्र व क्लेशपूर्ण व्यव्हार से दुख अशांति प्रदान कर घर को नरक बनाती है ।

**578**। कर्मों की गति भी गहन है अच्छे कर्म स्वर्ग का भागी बना कर जीवन कृतार्थ कर देते हैं बुरे कर्म नरकगामी व जीवन को दुखमय क्लेशमय बना देते हैं ।

**579**। जैसे एक ही सूर्य का प्रतिबिम्ब पानी के सब घडों में समान रूप से रहता है वैसे ही ईश्वर का प्रतिबिम्ब आत्मा के रूप में सब प्राणियों में रहता है ।

**580**। जब तक बच्चा अपने खेल खिलौनों में व्यस्त रहता है न भूख लगती है न मां की याद आती है खेल से जी भरते ही भूख भी लगती है मां को भी रो रो कर पुकारता है । ऐसे ही व्यक्ति जब माया में मग्न रहता है उसे प्रभु की याद नहीं आती जब दुखों से त्रस्त हो जाता है तब सब छोडकर मन से प्रभु को याद करता है व उन्हें पाने के लिये व्यग्र व प्रयत्नशील रहता है ।

**581**। जिसकी आत्मा में त्याग बलिदान आत्म विश्वास भक्तिभावना व पातिव्रत थर्म जैसी महान शक्तियां विद्यमान हों वह यमराज को भी अपने वश में करके उन पर विजय पा सकता है, ''सती सावित्री'' इसका उदाहरण हैं उन्होंने अपने सतीत्व के बल पर अपने पति सत्यवान की रक्षा की थी , यह विश्व प्रसिद्ध घटना है ।

**582**। बुद्धिजीवी और नासमझ गरीब व भोली भाली जनता के बीच कितना बडा अन्तराल आ गया है । व्यक्ति सिर से पांव तक भ्रष्टाचार में डूबा है गरीबों का विश्वासघात कर रहा है देश द्रोही है खूब पैसा लूट रहा है धोखे से चुनाव जीत रहा है , कितना निर्लज्ज अनैतिक व्यवहार निर्मित हो गया है भारत का दुर्भाग्य ही है।

**583**। निश्छलता सरलता अभ्यास तथा स्वयं को प्रभु की शरण में पूरी तरह से समर्पित करने पर ही संसार में काम क्रोध लोभ मोह व माया आदि दुर्गुण हृदय से दूर हो सकते हैं हृदय पवित्र हो सकता है ।

**584**। अंध श्रद्धा ही अंधविश्वास व अंधभक्ति के जन्म का कारण होते हैं उसी से अंध आस्था निर्माण होती है मानव उसी को ज्ञान समझ कर अज्ञानता को अपनाता रहता है ।

**585**। आत्म परायणता हृदय व मन को शुद्ध कर प्रभु से नाता जोड मुक्ति दिलाती है मन के वशीभूत होने से व्यक्ति इन्द्रियों का दास बना संसार में ही फंसा रहता है ।

**586**। मर्यादाहीन व स्वेच्छाचारी व्यक्ति को हमेशा मान व अपमान सताते हैं और उनकी ही चिन्ता में रहता है जिसके इन्द्रियां वश में हैं उसे मान अपमान की कोई चिन्ता नहीं ऐसा पुरुष महान संत है ।

**587**। जब तक आत्म विश्वास जाग्रत नहीं होगा हम पराधीन ही रहेंगे ।

**588**। सब प्राणी तो तरह तरह के पुतले मात्र हैं उन सबमें वही परब्रह्म परमात्मा आत्मा के रूप में विद्यमान है उसी से मस्तिष्क व शक्ति का संचार पूरे शरीर में रहता है उसके बिना शरीर मृत हो जाता है ।

**589**। जिस व्यक्ति के संपूर्ण इन्द्रियां अपने वश में है उसके हृदय व मस्तिष्क पर देवताओं का राज्य रहता है इन्द्रियां वश में न रहने पर उसके मस्तिष्क पर दानवों का राज्य रहता है ।

**590**। शांत स्थिर व दृढ हृदय सद्विचारों का घर होता है जो प्रभु से मिलाता है अशांत अस्थिर हृदय विकारों का घर होता है जो संसार में ही बांधे रखता है ।

**591**। हे प्रभु , इस पापी को जीवन पर्यन्त इतने दुख दो कि तुझे भूलने का साहस न कर सकें साथ ही सब पापों का बोझ भी कम होगा हृदय में शुद्धता आयेगी हृदय में तुझे बसा सकूंगा इन सब माया रूपी बंधनों से अगले जन्मों के लिये मुक्ति मिल सकेगी ।

**592**। जो ईश्वर का भक्त है वह सब प्राणियों में ईश्वर को देखता है और उत्तम भक्त वह है जोसब प्राणियों के साथ साथ सब जड वस्तुओं में भी ईश्वर का दर्शन करता है तथा पूरे विश्व को ही ईश्वर से ओत प्रोत देखता है जैसे वर्षा में सब जलमय ही दीखता है ।

**593**। ईशवर को जानना ही निर्वाण व मुक्ति का कारण होता है ।

**594**। यदि माता पिता के विचारों में एकता व समन्वय नहीं होगा तो उनकी संतान का भविष्य भी अनिश्चित व अंधकारमय हो सकता है इसलिये बच्चों के अच्छे उन्नतिपूर्ण भविष्य के आधार के लिये माता पिता दोनों के विचारों में एकता व समन्वयता की बहुत आवश्यकता है। तभी वे कारगर निर्णय ले सकते हैं ।

**595**। महिलाओं का अंग प्रदर्शन करना उनकी मानसिकता व चरित्र सिद्धान्तों का प्रदर्शन है, जन साधारण यदि उनको समाज में आदर व मान देता है तो ऐसे लोग केवल बुरी विचारधाराओं को ही बढावा दे रहे हैं ।

**596**। मौन व्रत एक तपस्या है इसे ऋषी मुनियों ने भी बहुत महत्व दिया है इससे तन की ऊर्जा कम नष्ट होती है अशांति से बचे रहते हैं ज्यादा बोलने से जो झूठ बोलने की संभावना होती है उससे बचे रहते हैं हृदय में एकाग्रता आती है चंचलता नहीं रहती आत्म शक्ति बढती है आत्म चिंतन का भरपूर समय मिलता है सच्चे अर्थ में मौन व्रत रखना प्रभु को पाने का प्रयत्न है।

**597**। जिस व्यक्ति का हृदय नाना प्रकार के दोषों से परिपूर्ण रहता है उसकी मानसिकता भी दूषित होती है सबके अन्दर भी वह दोष ही देखता है स्वयं भी विकार ग्रस्त दुखी अशांत व क्लेशपूर्ण रहता है ।

**598**। विवेकी पुरुष हमेशा अपने सद्गुणों को छिपाता है और दूसरों के सद्गुणों को धारण करता है और विवेकहीन पुरुष अपने दुर्गुणों को छिपाता है तथा दूसरों के दुर्गुणों को धारण करता है ।

**599**। किसी भी वस्तु की सुगन्ध सीमित वायुमंडल में ही रहती है परन्तु एक भद्र व महान व्यक्ति के अच्छे गुणों व कार्यों की कीर्ति पूरे विश्व में रहती है व समस्त मानव जाति के लिये प्रेरणा का स्त्रोत व सुखदायी होती है।

**600**। ईश्वर की कृपा से मनुष्य के अन्दर सब गुणों का समावेश होता है उसको अपने विवेक से जानना और अपनाना , अपना भविष्य उज्जवल बनाना , प्रभु को जानना , मुक्ति पाना उसका काम है ।

**601**। उच्च जाति में जन्म लेकर उच्च जाति का अहंकार होना जाति की गरिमा नष्ट करना है निम्न जाति में जन्म लेकर दयावान होना जाति की गरिमा बढाना है। जाति कोई बडी छोटी नहीं होती लोगों का भ्रम है।

**602**। सच्चाई क्षमा दया परोपकार भक्ति व निस्वार्थ सेवाभाव वाला भगवान का भक्त है पर इन गुणों के साथ साथ स्वयं व ईश्वर को जानने वाला ब्रह्मज्ञानी ही है इसमें कोई संदेह नहीं है ।

**603**। हृदय की पवित्रता व अपवित्रता अच्छे बुरे कामों विचारों पर निर्भर होती है, पवित्रता कल्याणकारी है।

**604**। जैसे सब जगह का जल गंगाजल की धारा में आकर पवित्र हो जाता है पापी भी सद्‌गुरु की शरण में आकर महान व पूजनीय हो जाता है ।

**605**। गृहस्थ जीवन को सुखी व शांतिपूर्ण बनाने के लिये घर के सब लोगों के विचारों का सम्मान करना चाहिये सबको साथ लेकर चलना चाहिये यदि परिवार का प्रत्येक व्यक्ति अपना सहयोग देता है सम्पूर्ण जीवन सुखशांतिमय हो जाता है ।

**606**। जिसकी इन्द्रियां वश में नहीं हैं मन चंचल है आसक्ति संसार के सुखों में है उसका मन सत्संग में कभी नहीं लगेगा जन्म जन्मांतर तक संसार में भटकता रहेगा ।

**607**। जब बच्चा मां के गर्भ में होता है हमेशा भगवान को ही याद करता रहता है पिछले जन्म के बारे में भी उसे सब मालूम रहता है विकारों से दूर गंगाजल की भांति पवित्र होता है संसार में आते ही माया की काली छाया पडते ही भगवान को भूल जाता है मायावी संसार की यात्रा शुरु हो जाती है।

**608**। जैसे डूबते व्यक्ति को बचने के लिये सहारे की आवश्यकता होती है वैसे ही भवसागर से पार होने के लिये भजन पूजा सत्संग विश्वास तथा प्रभु की आराधना की आवश्यकता होती है ।

**609**। एक दीपक की लौ को प्रज्वलित करने के लिये तेल और बत्ती चाहिये अंधकार को दूर करने के लिये , ऐसे ही भक्तिरूपी ज्योति प्रज्वलित करने के लिये भावपूर्ण श्रद्धा और आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है उसी से विकारों का अंधकार दूर होकर अच्छे विचारों का प्रकाश प्रज्वलित होकर हृदय पवित्र होता है।

**610**। जो व्यक्ति ज्ञानी व आत्मवान है संशय दूर हो गये हैं प्रभु सुमिरन में व्यस्त रहता है उस महापुरुष योगी को कर्म नहीं बांध सकते ।

**611**। अग्नि के ताप से सोना निखरता है संयमी व कर्त्तव्यनिष्ठ भी आपत्ति तथा विपत्तियों से निखरता है व आत्म ज्ञानी हो जाता है ।

**612**। कलयुगी संसार में रूढीवादी और अंधविश्वासी लोगों की कमी नहीं है। किसी देश के राजघराने के किसी व्यक्ति से हुआ अपराध क्षम्य होता है राजनेता भी बना दिया जाता है पर साधारण व्यक्ति अपराध के बाद दंडित किया जाता है।भगवान के यहां सब बराबर हैं राजा हो या रंक , सबको बराबर दंड मिलेगा ।

**613**। लोभ स्वार्थ कोध व अहंकार से राक्षसी प्रवृत्ति उत्पन्न होती है उससे मानसिक संतुलन खो जाता है व्यक्ति नाना प्रकार के दुष्कर्म करने को उद्यत रहता है।

**614**। अच्छे विचारों को ग्रहण करने वाला कर्त्तव्य पालन करने वाला जब अपने अंतिम समय का ध्यान करता है उसमें वैराग्य पैदा होता है तथा दिन प्रतिदिन हृदय शुद्ध होता है।

**615**। इससे पहिले कि मृत्यु हमें अनाथ बना दे और बाद में हमारे पास ले जाने के लिये कुछ भी न रहे अपने जीवन को हरि भजन से सत्संग निस्वार्थ सेवा से तथा अन्य सत्कर्मों द्वारा सम्पन्न बनाना चाहिये ताकि मृत्यु के पश्चात् प्रभु की शरण में जाने के अधिकारी बन सकें और आध्यात्मिक निधि द्वारा प्रभु को पा सकें ।

**616**। क्षमा मांगने वाला व्यक्ति क्षमा मांगकर अपनी महानता का परिचय देता है क्षमा करने वाला उससे भी महान होता है क्योंकि क्षमा स्वयं में एक ईश्वरीय अनुभूति है ।

**617**। दीपक की लौ में जैसे बत्ती धीरे धीरे जलकर राख हो जाती है ऋषी मुनि भी अपने कोध व अहंकार की ज्वाला में अपने तेज और तप को नष्ट करते रहते हैं ।

**618**। विद्वता मानव को दिया हुआ ईश्वर का एक अदभुत् उपहार है उसका सदुपयोग कर वह ईश्वर को पा सकता है दुरुपयोग करके राक्षस बन जीवन को नरक बना सकता है ।

**619**। परमब्रह्म परमात्मा सब कर्मो का प्रेरणादायक व फलदायक है बुरे कर्म करने पर अंतरात्मा को चेतावनी भी देता है किन्तु मानव अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनकर लाभ उठाता है या नहीं उसी पर निर्भर है ।

**620**। सांसारिक वस्तुओं से व भौतिक सुख साधनों से मृत्यु के बाद छुटकारा मिल जाता है परन्तु पुण्य व पाप तो ऐसी सम्पदा है जो मृत्यु के बाद भी पीछा नहीं छोडते । अच्छे पुण्य कर्म होंगे तो स्वर्ग मिलेगा बुरे पाप कर्म होंगे तो नरक मिलेगा तथा आगे के जन्मों का निर्णय भी उन्हीं पर निर्भर होगा ।

**621**। आत्म विश्वास ईश्वर प्रदत्त आत्म प्रेरणा है यह सच्चा साथी प्रेरणादायक व सफलता की कुंजी है ।इसके बिना कोई भी संकल्प लक्ष्य तथा बडा कार्य पूरा न्हीं किया जा सकता ।

**622**। मानव सुख शांति की सार्थकता बहुत सारे भौतिक सुख साधनों को व लेखन सामग्री को एकत्र करने में ही नहीं है अपितु आाध्यात्मिक मूल्यों को जानने में तथा उनको व्यक्तिगत जीवन में ढालने में है तभी मानव कल्याण होगा उसको सुख शांति मिलेगी ।

**623**। सम्पूर्ण ज्ञानानन्द और परमानन्द का स्त्रोत तो अपने ही हृदय में विद्यमान है कहीं ढूंढने की जरूरत ही नहीं है मन की पवित्रता पूरी तरह हुई कि ईश्वर की अनुभूति होने लग जाती है यही एकमात्र संकेत है ।

**624**। प्रभु तो हार्दिक भक्ति और सच्चे प्रेम के भूखे हैं उन्हें सोना चांदी पैसा व बहूमूल्य वस्तुओं से कोई लगाव नहीं है मन्दिरों में यह सब चढाना बेकार है उन्हें तो सच्चे भक्तों का हार्दिक प्रेम चाहिये ।

**625**। कोई भी घटना जो बाद में उग्र रूप धारण कर लेती है प्रारंभिक कारण बहुत छोटा सा होता है अगर उचित समय पर उस पर नियंत्रण पा लिया जाये तो वह उतना उग्र रूप नहीं ले सकता एक चिंगारी को बुझाने के लिये चुल्लु भर पानी ही चाहिये समय पर ध्यान न दिया जाये तो वही एक भयंकर आग का रूप ले सकता है ।

**626**। जो सत्पुरुष है और अच्छे विचारों से युक्त है उसकी धार्मिक प्रवृत्तियां ही उसे सब विकारों से दूर रखती हैं दुराचारी को उसकी वासनायें ही नष्ट कर देती हैं ।

**627**। व्यक्ति अपने गुणों से ही महान होता है ऊंचे आसन पर बैठने से नहीं ।

**628**। आपके सामने जो अच्छा कार्य हो उसे निष्कपट भाव से शीघ्र पूरा करो तभी सफलता मिलेगी ।

**629**। कर्म में अकर्म को देखना और अकर्म में कर्म को देखना महापुरुष योगी व ज्ञानी का लक्षण है ।

**630**। पिता पुत्र के नाते माता बेटे के नाते बहिन भाई के नाते तथा जो अन्य संवंधी आपस में प्रेम करते हैं वह माया है वह प्रभु को पाने का अधिकारी नहीं होता जो व्यक्ति सब प्राणियों को ईश्वर के नाते प्रेम करता है सब में ईश्वर को देखता है वही सच्चा प्रेम है वही प्रेम ईश्वर को पाने का अधिकारी है ।

**631**। जिस व्यक्ति के हृदय में प्रेम दया व संवेदनशीलता नहीं है वह हाडमांस का पुतला ही है। मिट्टी का पुतला न स्वयं के लिये लाभकारी है न दूसरों के लिये ही है ।

**632**। आत्मबल व आत्म विश्वास में वह शक्ति है जो सहस्त्र आपदाओं व दुखों को सहन कर उन पर विजय पा सकती है क्योंकि वह अप्रत्यक्ष रूप से ईश्वर की ही प्रेरणा व आशीर्वाद होता है ।

**633**। जिन इच्छाओं व आकांक्षाओं को आध्यात्मिक कार्यों व निस्वार्थ सेवाओं में उपयोग किया जाता है वो दैविक होती हैं भौतिक कार्यों व स्वार्थ के लिये उपयोग की जाने वाली दानवीय होती हैं ।

**634**। धन संपत्ति वैभव आदि सांसारिक होने के कारण पराई व दुखदायी होती हैं सत्संग सत्कर्म व निस्वार्थ सेवा आध्यात्मिक धन है फलदायक है इस जीवन में भी साथ रहेगा आगे आने वाले जन्मों में भी साथ रहेगा ।

**635**। सत्संग सच बोलना निस्वार्थ सेवा परोपकार हरि सुमिरन यह पांचों अनमोल रत्न हैं जिसके पास ये सब हैं वह सबसे बडा धनी है विश्व में बाकी सब धनी होते हुये भी दरिद्र हैं ।

**636**। कपटी विद्वान् व्यक्ति से निष्कपट एक साधारण व्यक्ति उत्तम होता है ।

**637**। जब पाप कर्म पुण्य कर्मों के ऊपर हावी हो जाते हैं तो व्यक्ति के अच्छे विचार लोप हो जाते हैं बुरे विचार उत्पन्न हो जाते हैं और जब पुण्य कर्म पाप कर्मों पर हावी होते हैं तो अच्छे विचार उत्पन्न होते हैं बुरे विचार लोप हो जाते हैं।

**638**। भगवान श्री राम बडे दयालु कृपा तथा करुणा के सागर थे उन्होंने अपनी माता कैकेयी की आज्ञा का पालन कर भरत को अयोध्या का राज्य सौंपकर स्वयं चौदह साल के बनवास के लिये चले गये । मित्र सुग्रीव को बाली के अत्याचारों से मुक्ति दिलाकर किष्किंधा का राजा बनाया तथा रावण के अत्याचारों से मुक्ति दिलाकर विभीषण को लंका का राज दिलाया इसके अलावा उन्होंने अनेक परम भक्तों का भी उद्धार किया ।

**639**। प्रकाश की नन्हीं सी भी किरण प्रवेश कर जैसे संपूर्ण अंधकार को दूर कर प्रकाशमान करती है उसी प्रकार यदि प्रभु की कृपा से एक भी सदगुण मनुष्य के हृदय में प्रवेश कर जाये तो हृदय का संपूर्ण अंधकार दूर होकर पूरा जीवन प्रकाशमय व उज्जवल हो जाता है।

**640**। कोध व अहंकार ये मानव के दो बडे विकराल व शक्ति शाली शत्रु हैं इन दोनों से कोई भी अभी तक बच नहीं पाया है यहां तक कि बडे बडे ऋषी मुनि व महापुरुष जिन्होंने हजारों वर्ष तपस्या की थी और उनके अन्दर अगाध तेज और तप बल था उनको भी इन दोनों के आगे नतमस्तक होना पडा । इसके लिये भारत का पूरा इतिहास साक्षी है।

अन्कण ऊषा  अग्रवाल दृारा